रंगीन चित्रों सहित

आरती संग्रह

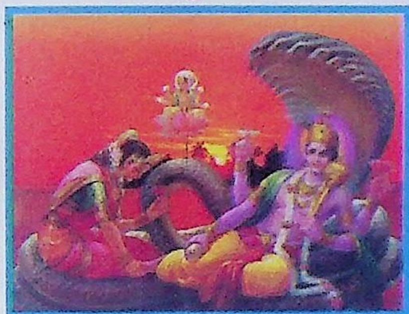
प्रमुख देवी-देवताओं की आरतियों का अनुपम संग्रह



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

आरती संग्रह

प्रमुख देवी-देवताओं की आरतियों का अनुपम संग्रह



50/-

श्री शिव प्रकाशन मंदिर

2994, बल्ली मारान, दिल्ली-6, फोन : 23974978, 23917707

प्रचार में पुस्तकें बाँटने वाले सज्जन प्रकाशक से सम्पर्क करें।
उन्हें पुस्तकें लागत मूल्य पर दी जायेंगी।

आरती क्रम

आरती विधि

पूजा के अन्त में आरती की जाती है। पूजन में अज्ञानतावश यदि कोई कमी रह जाए, तो आरती से उसकी पूर्ति होती है।

कुंकुम, अगर, कपूर, घृत और चन्दन, पांच बत्तियां अथवा दीपक में रुई और घी की बत्तियां बनाकर उन्हें प्रज्जवलित कर शंख, घण्टा आदि बजाते हुए आरती करनी चाहिए।

आरती करते समय सर्वप्रथम भगवान् की प्रतिमा के चरणों में उसे पांच बार घुमाएं व दो बार नाभि प्रदेश में, दो बार मुखमण्डल पर और सात बार समस्त अंगों पर। यह पूजन के पश्चात अनिवार्य है। इससे देवी-देवता प्रसन्न होते हैं।

आरती के बिना किसी भी देवता की पूजा, आराधना अपूर्ण एवं निष्फल मानी जाती है। प्रस्तुत पुस्तक में अनेकों देवी-देवताओं जैसे- गणेश, शिव, हनुमान, सरस्वती जी, श्रीराम, लक्ष्मी जी, संतोषी माता, गायत्री, श्री जगदीश जी, श्री सत्यनारायण, श्री बाला जी, श्री गंगा जी एवं अन्य प्रमुख आरतियाँ दी गयीं हैं। आशा है इन आरतियों का संकलन पाठकों को पसन्द आयेगा।



आरती श्री मंगलाचरण

कर्पूरगौरं करूणावतारं,
संसार सारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे,
भवं भवानी सहितं नमामि।।
गजाननं भूतगणादिसेवितं,
कपित्थजम्बूफल चारू भक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं,
नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्।।
नीलाम्बुज श्यामलकोमलांग,
सीतासमारोपितवाम भागम्।
पाणौ महासायक-चारूचापं,
नमामि रामं रघुवंशनाथम्।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वम मम देव देवा।।



आरती श्री गणेश जी की

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥
एक दंत दयावंत, चार भुजाधारी।
मस्तक सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी॥
अंधन को आँख देत, कोढ़िन को काया।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया॥
हार चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा।
लड्डुअन का भोग लगे, संत करें सेवा॥
दीनन की लाज राखो, शम्भु-सुत-वारी।
कामना को पूरा करो, जग बलिहारी॥
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥



आरती श्री जगदीश जी

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट, क्षण में दूर करे॥
जो ध्यावै फल पावै, दु:ख विनसे मनका।
सुख-सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तन का॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी॥
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन-कर्ता।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूँ दयामय! तुमको मैं कुमति॥
दीनबन्धु दु:खहर्ता, तुम रक्षक मेरे।
अपने हाथ बढ़ाओ, द्वार पड़ा तेरे॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा॥
तन, मन, धन सब तेरा, स्वामी सब कुछ है तेरा।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा।
श्री जगदीश जी की आरती, जो कोइ नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पति पावे॥



आरती श्री रामचन्द्र जी की

आरती कीजै श्री रघुबरजी की।
सत चित आनन्द शिव सुन्दर की॥
दशरथ - तनय, कौसिला - नन्दन।
सुर - मुनि - रक्षक दैत्य - निकन्दन॥
अनुगत - भक्त भक्त - उर - चन्दन।
मर्यादा - पुरुषोत्तम वरकी॥
निर्गुन - सगुन अरूप - रूपनिधि।
सकल लोक - वन्दित विभिन्न विधि॥
हरण शोक - भय, दायक सब सिधि।
मायारहित दिव्य नर-वरकी॥
जानकि पति सुराधिपति जगपति।
अखिल लोक पालक त्रिलोक गति॥
विश्ववंद्य अनवंद्य अमित-मति।
एकमात्र गति सचराचर की॥
शरणागत - वत्सल - व्रतधारी।
भक्त - कल्पतरु - वर असुरारी॥
नाम तेल जग पावनकारी।
बानर-सखा, दीन-दुख हरकी॥



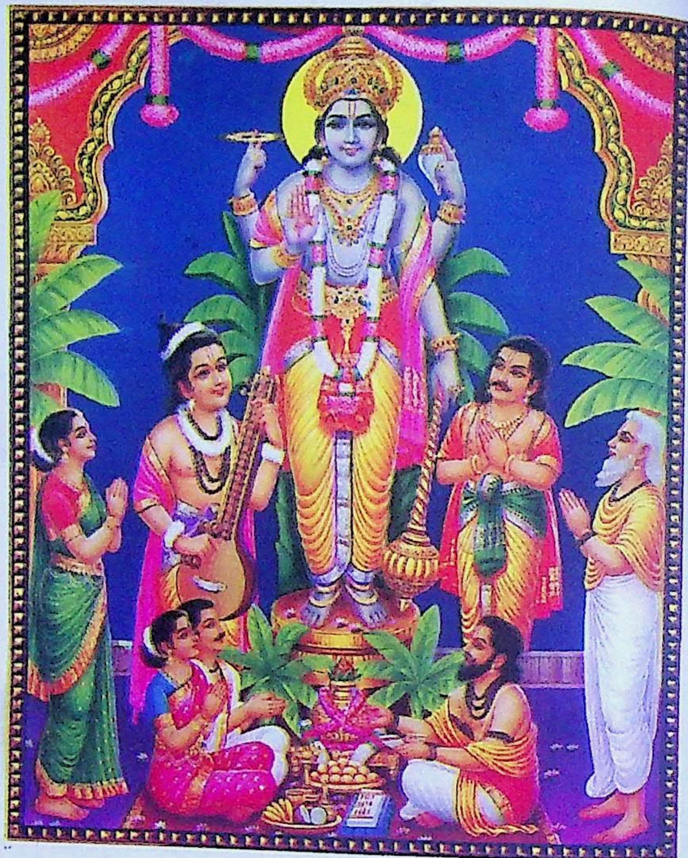
आरती श्री शिवजी की

जय शिव ओंकारा, प्रभु जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांगी धारा॥
एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे॥
दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज अति सोहे।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे॥
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी।
चंदन मृग मद सोहे भाले शुभकारी॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
ब्रह्मादिक सनकादिक भूतादिक संगे॥
कर के मध्य कमंडलु चक्र त्रिशूल धारी।
सुखकारी दुखहारी जगपालन कारी॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका॥
त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पति पावे॥



आरती कुन्ज बिहारी की

आरती कुन्ज बिहारी की। श्री गिरधर कृष्णमुरारी की।
गले में बैजयन्ती माला, बजावै मुरली मधुर बाला,
श्रवन में कुण्डल झलकाला, नंद के आनन्द नन्दलाला,
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली,
लतन में ठाढ़े बनमाली। भ्रमर सी अलक,
चन्द्र सी झलक। ललित छबि श्यामा प्यारी की॥
कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दरसन को तरसैं,
गगन सों सुमन बहुत बरसै, बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग,
ग्वालिनी संग, अतुल रति गोप कुमारी की॥
जहां ते प्रगट भई गंगा, सकल-मल हारिणि श्रीगंगा,
स्मरन ते होत मोह भंगा, बसी शिव शीश जटाके बीच,
हरै अघ कीच, चरन छबि श्रीबनवारी की॥
चमकती उज्ज्वल तट रेणू, बज रही बृन्दाबन बेनू,
चहूं दिशि गोपी ग्वाल धेनू, हंसत मृदु मंद चांदनी चंद्र,
कटत भव फन्द, टेर सुनो दीन भिखारी की॥
आरती कुंजबिहारी की। श्री गिरधर कृष्णमुरारी की।



आरती श्री सत्य नारायणजी की

जय लक्ष्मीरमणा, स्वामी जय लक्ष्मीरमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन-पातक-हरणा॥
रत्न जड़ित सिंहासन, अद्‌भुत छबि राजे।
नारद करत निरंजन, घंटा ध्वनि बाजे॥
प्रकट भये कलि कारण, द्विज को दरस दियो।
बूढ़ो ब्राह्मण बनके, कंचन महल कियो॥
दुर्बल भील कठारो, जिनपर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी विंपद हरी॥
वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीनीं।
सो फल भोग्यो प्रभुजी, फिर अस्तुति कीनीं॥
भाव-भक्ति के कारण, छिन-छिन रूप धरयो।
श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सरयो॥
ग्वाल-बाल संग राजा, वन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हा, दीनदयालु हरी॥
चढ़त प्रसाद सवायो, कदली फल मेवा।
धूप-दीप-तुलसी से, राजी सत्यदेवा॥
सत्यनारायण की आरती, जो कोई नर गावे।
ऋद्धि-सिद्धि सुख-सम्पति जी भर के पावे॥


श्री
राम
ॐ

आरती श्री बजरंगबली जी की!

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥
जाके बल से गिरिवर काँपै। रोग-दोष जाके निकट न झाँपै॥
अंजनि पुत्र महा-बल दाई। संतन के प्रभु सदा सहाई॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये॥
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई॥
लंका जारि असुर सँहारे। सियारामजी के काज सँवारे॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि सजीवन प्रान उबारे॥
पैठि पताल तोरि जम-कारे। अहिरावन की भुजा उखारे॥
बायें भुजा असुर दल मारे। दहिने भुजा संतजन तारे॥
सुर नर मुनि आरती उतारे। जय जय जय हनुमान उचारे॥
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरति करत अंजना माई॥
जो हनुमान जी की आरति गावै। बसि बैकुंठ परम पद पावै॥
आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥

॥ जय बजरंगबली की ॥



आरती श्री सरस्वती जी की!

जय सरस्वती माता, मैया जय सरस्वती माता।
सद्‌गुण वैभव शालिनी, त्रिभुवन विख्याता॥
चन्द्रवदनि पद्‌मासिनि, द्युति मंगलकारी।
सोहे शुभ हंस सवारी, अतुल तेजधारी॥
बाएं कर में वीणा, दाएं कर माला।
शीश मुकुट मणि सोहे, गल मोतियन माला॥
देवी शरण जो आए, उनका उद्धार किया।
पैठि मंथरा दासी, रावण संहार किया॥
विद्या ज्ञान प्रदायिनि ज्ञान प्रकाश भरो।
मोह, अज्ञान और तिमिर का, जग से नाश करो॥
धूप दीप फल मेवा, मां स्वीकार करो।
ज्ञानचक्षु दे माता, जग निस्तार करो॥
मां सरस्वती की आरती, जो कोई नर गावे।
हितकारी सुखकारी, ज्ञान भक्ति पावे॥


শুভ
লাভ

आरती श्री लक्ष्मीजी की

ओउम् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत, हर-विष्णु-धाता॥
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि-धन पाता॥
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता॥
जिस घर में तुम रहतीं, सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता॥
तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न हो पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता॥
शुभ-गुण-मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहिं पाता॥
माँ लक्ष्मीजी की आरती, जो कोई जन गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥
ओउम् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।



आरती श्री दुर्गा की

जय अम्बे गौरी मैया, जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी।
माँग सिंदूर विराजत, टीको मृगपद को।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चन्द्र बदन नीको।।
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुष्प की माला कंठन पर साजै।।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर-नर-मुनिजन सेवत, तिनके दुःखहारी।।

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योती।।
शुम्भ निशुम्भ बिदारे, महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना निशदिन मदमाती।।
चण्ड मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे सुर भय हीन करे।।
ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी।।
चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरूं।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू।।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दु:ख हर्ता, सुख सम्पति करता।।
भुजा चार अति शोभित, वरमुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी।
कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती।
मालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योती।।
माँ अम्बे जी की आरती जो कोई नर गावै।
कहत शिवानंद स्वामी सुख-सम्पति पावै।।



आरती श्री गंगा जी की

ॐ जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता॥
चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता॥
ओ३म् जय गंगे माता०॥
पुत्र सगर के तारे, सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता॥
ओ३म् जय गंगे माता०॥
एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता।
यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता॥
ओ३म् जय गंगे माता०॥
आरती मातु तुम्हारी, जो नर नित गाता।
सेवक वही सहज में, मुक्ति को पाता॥
ओ३म् जय गंगे माता०॥



आरती जय संतोषी मां की!

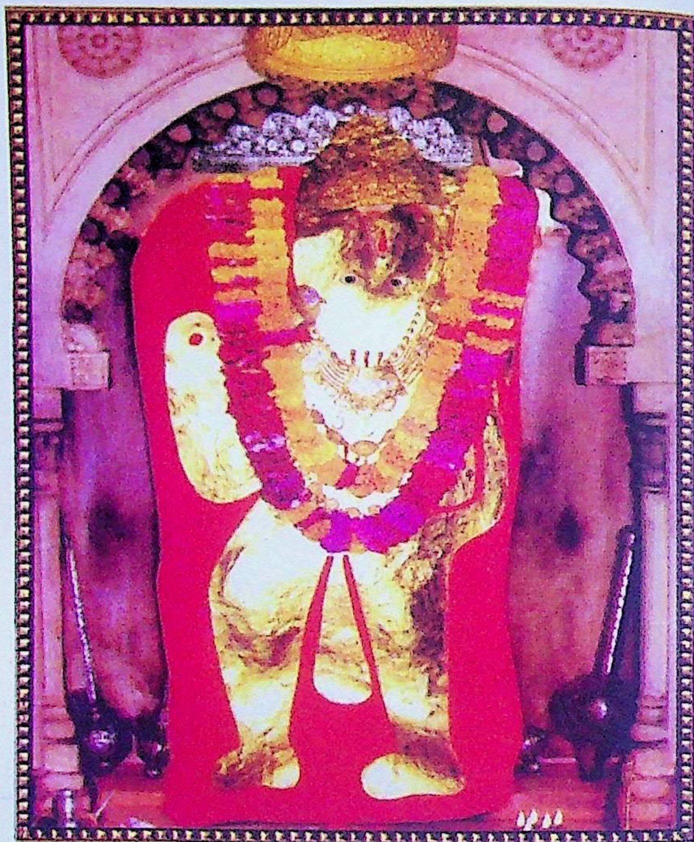
जय संतोषी माता, मैया जय संतोषी माता।
अपने सेवक जन की सुख सम्पत्ति दाता॥
सुन्दर चीर सुनहरी, मां धारण कीन्हों।
हीरा पन्ना दमके, तन शृंगार लीन्हों॥
गेरू लाल छटा छवि, बदन कमल सोहे।
मन्द हंसत करुणामयी, त्रिभुवन मन मोहे॥

स्वर्ण सिंहासन बैठी, चंवर ढुरे प्यारे।
धूप दीप मधु मेवा भोग धरे न्यारे॥
गुड़ अरु चना परम प्रिय तामे सन्तोष कियो।
सन्तोषी कहलाई भक्तन वैभव दिया॥
शुक्रवार प्रिय मानत आज दिवस सोही।
भक्त मण्डली आई कथा सुनत मोही॥
मन्दिर जगमग ज्योति मंगल ध्वनि छाई।
विनय करें हम बालक चरनन सिर नाई॥
भक्ति भावमय पूजा अंगीकृत कीजै।
जो मन बसे हमारे इच्छित फल दीजै॥
दुखी दरिद्री रोगी संकट मुक्त किये।
बहु धन-धान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिये॥
ध्यान धर्यो जाने तेरो, मनवांछित फल पायो।
पूजा कथा श्रवण कर घर आनन्द आयो॥
शरण गहे की लज्जा रखियो जगदम्बे।
संकट तू ही निवारे दयामयी अम्बे॥


ॐ भूर्भुवः स्वः तत सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥

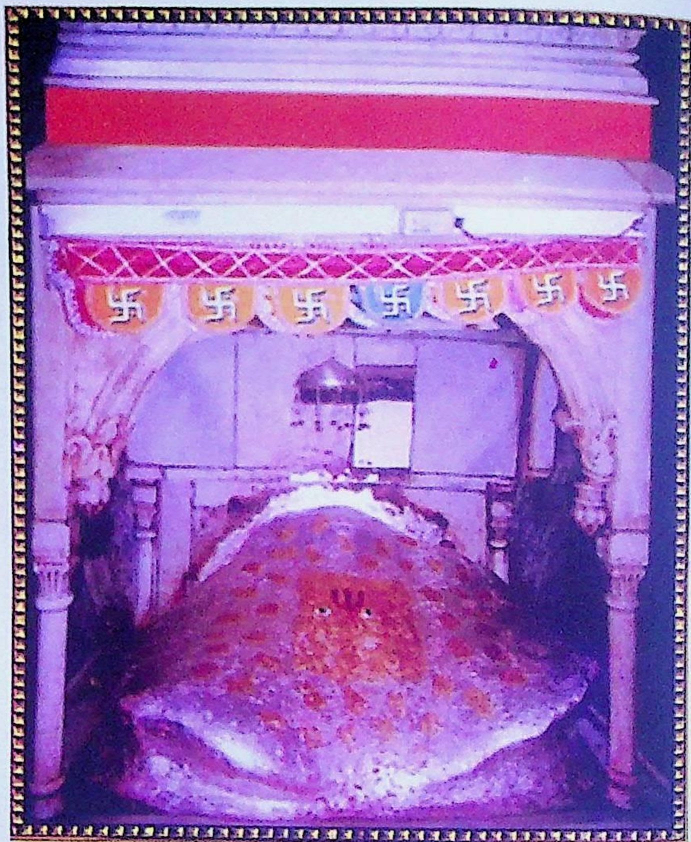
आरती श्री गायत्रीजी की

आरती श्री गायत्री जी की॥ टे क।।
ज्ञान को दीप और श्रद्धा की बाती,
सो भक्ति ही पूर्ति करै जहं घी की॥ आरती॥
मानस की शुचि थाल के ऊपर,
देवि की जोति जगै जहं नीकी॥ आरती॥
शुद्ध मनोरथ के जहां घण्टा,
बाजै, करै पूरी आसहु ही की॥ आरती॥
जाके समक्ष हमें तिहुं लोक की,
गद्दी मिले तबहू लगे फीकी॥ आरती॥
संकट आवै न पास कबौं तिन्हें,
सम्पदा और सुख की बन लीकी॥ आरती॥
आरती प्रेम सों नेम सों जो करि,
ध्यावहिं मूरति ब्रह्म लली की॥ आरती॥



आरती श्री बालाजी की

ॐ जय हनुमत वीरा, स्वामी जय हनुमत वीरा।
संकट मोचन स्वामी, तुम हो रणधीरा॥ ॐ ॥
पवन-पुत्र अंजनी-सुत, महिमा अति भारी।
दु:ख दारिद्र्य मिटाओ, संकट भय हारी॥ ॐ ॥
बाल समय में तुमने, रवि को भक्ष लियो।
देवन स्तुति कीन्हीं, तबहीं छोड़ दियो॥ ॐ ॥
कपि सुग्रीव राम संग, मैत्री करवाई।
बालीबली मराये, कपीशहि गद्दी दिलवाई॥ ॐ ॥
जारि लंक सिय-सुधि ले आए, वानर हर्षाये।
कारज कठिन सुधारे, रघुबर मन भाये॥ ॐ ॥
शक्ति लगी लक्ष्मण को, भारी सोच भयो।
लाय संजीवन बूटी, दु:ख सब दूर कियो॥ ॐ ॥
ले पाताल अहिरावण, जबहि पैठि गयो॥
ताहि मारि प्रभु लाये, जय जयकार भयो। ॐ ॥
घाटा मेंहदी पुर में शोभित दर्शन अति भारी।
मंगल और शनिचर, मेला है जारी॥ ॐ ॥
श्री बालाजी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत इन्द्र हर्षित, मनवांछित फल पावे॥ ॐ ॥



आरती श्री प्रेतराज सरकार की

जय प्रेतराज कृपालु मेरी, अरज अब सुन लीजिये।
मैं शरण तुम्हारी आ गया हूँ, नाथ दर्शन दीजिये॥
मैं करूं विनती आपसे अब, तुम दयामय चित धरो।
चरणों का ले लिया आसरा, प्रभु वेग से मेरा दुःख हरो॥
सिर पर मुकुट कर में धनुष, गल बीच मोतियन की माल है।
जो करे दर्शन प्रेम से सब, कटत तन के जाल हैं॥
जब पहन बख्तर ले खड़ग, बाई बगल में ढाल है।
ऐसा भयंकर रूप जिनका, देख डरपत काल है।
अति प्रबल सेना विकट योद्धा, संग में विकराल हैं।
सब भूत प्रेत पिशाच बांधे, कैद करते हाल हैं॥
तब रूप धरते वीर का, करते तैयारी चलन की।
संग में लड़ाके ज्वान जिनकी, थाह नहीं है बलन की॥
तुम सब तरह सामर्थ हो, प्रभु सकल सुख के धाम हो।
दुष्टों के मारनहार हो, भक्तों के पूरण काम हो॥
मैं हूँ मती का मन्द, मेरी बुद्धि को निर्मल करो।

अज्ञान का अन्धेर उर में, ज्ञान का दीपक धरो॥
सब मनोरथ सिद्ध करते, जो कोई सेवा करे।
तन्दुल बूरा घृत मेवा, भेंट ले आगे धरे॥
सुयश सुन कर आपका, दुखिया तो आये दूर के।
सब स्त्री अरु पुरुष आकर, पड़े हैं चरण हजूर के॥
लीला है अद्भुत आपकी, महिमा तो अपरंपार है।
मैं ध्यान जिस दम धरत हूँ, रच देना मंगलाचार है॥
सेवक गणेशपुरी महन्त जी की, लाज तुम्हारे हाथ है।
करना खता सब माफ उनकी, देना हरदम साथ है॥
दरबार में आओ अभी, सरकार में हाजिर खड़ा।
इन्साफ मेरा अब करो, चरणों में आकर गिर पड़ा॥
अर्जी बहुत मैं दे चुका, अब गौर इस पर कीजिये।
तत्काल इस पर हुक्म लिख दो, फैसला कर दीजिए॥
महाराज की यह स्तुति, कोई नेम से गाया करे।
सब सिद्ध कारज होय उनके, रोग पीड़ा सब टरे॥
"सुखराम" सेवक आपका, उसको नहीं बिसाराइये।
जै जै मनाऊं आपकी, बेड़े को पार लगाइये॥

आरती श्री भैरव कोतवाल

सुनो जी भैरव लाड़िले,
कर जोड़ कर विनती करूं।
कृपा तुम्हारी चाहिए,
मैं ध्यान तुम्हारा ही धरूं।
मैं चरण छूता आपके,
अर्जी मेरी सुन लीजिये।
मैं हूँ मति का मन्द,
मेरी कुछ मदद तो कीजिये।
महिमा तुम्हारी बहुत,
कुछ थोड़ी सी मैं वर्णन करूं। सुनो जी भैरव...
करते सवारी स्वान की,
चारों दिशा में राज्य है।
जितने भी भूत और प्रेत,
सबके आप ही सरताज हैं।
हथियार हैं जो आपके,
उनका मैं क्या वर्णन करूं। सुनो जी भैरव...

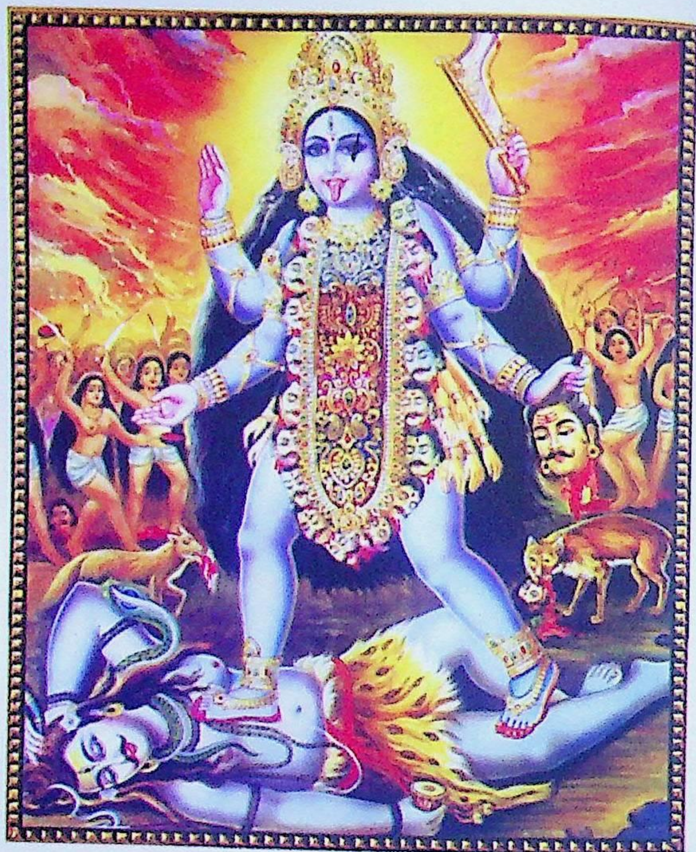


माता जी के सामने तुम,
नृत्य भी करते सदा।
गा गा के गुण अनुराग से,
उनको रिझाते हो सदा।
एक सांकली है आपकी,
तारीफ उसकी क्या करूं। सुनो जी भैरव...
बहुत सी महिमा तुम्हारी,
मेंहदीपुर सरनाम है।
आते जगत के यात्री,
बजरंग का स्थान है।
श्री प्रेतराज सरकार के,
मैं शीश चरणों में धरूं। सुनो जी भैरव...
निशदिन तुम्हारे खेल से,
माताजी खुश होती रहें।
सिर पर तुम्हारे हाथ रख कर,
आशीर्वाद देती रहें।
कर जोड़ कर विनती करूं,
अरु शीश चरणों में धरूं। सुनो जी भैरव...



आरती श्री बांके बिहारी जी की

श्री बांके बिहारी तेरी आरती गाऊं
कुंज बिहारी तेरी आरती गाऊं, श्री बांके...
श्याम सुन्दर तेरी आरती गाऊं
मोर मुकुट प्रभु शीश पे सोहे, श्री बांके...
प्यारी बंशी मेरो मन मोहे
देखि छबि बलिहारी जाऊं, श्री बांके...
चरणों से निकली गंगा प्यारी,
जिसने सारी दुनिया तारी श्री बांके...
मैं उन चरणों दर्शन पाऊं,
दास-अनाथ के नाथ आप हो, श्री बांके...
दुख-सुख जीवन प्यारे साथ आप हो
हरि चरणों में शीश नवाऊं, श्री बांके...
श्री हरि दास के प्यार तुम हो,
मेरे मोहन जीवन धन तुम हो,
देखि युगल छवि बलि-बलि जाऊं, श्री बांके...
आरती गाऊं प्यारे तुमको रिझाऊं,
हे गिरधर तेरी आरती गाऊं।



आरती श्री काली जी की

अम्बे तू है जगदम्बे काली जय दुर्गे खप्पर वाली।
तेरे ही गुण गाएं भारती।
ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती।
तेरे भक्त जनों पे माता भीर पड़ी है भारी।
दानव दल पर टूट पड़ो मां करके सिंह सवारी।।
सौ-सौ सिंहों से है बलशाली है दस भुजाओं वाली।
दुखियों के दुखड़े निवारती।
ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती।
मां बेटे का है इस जग में बड़ा ही निर्मल नाता।
पूत कपूत सुने हैं पर ना माता सुनी कुमाता।।
सब पे करुणा दरसाने वाली अमृत बरसाने वाली।
दुखियों के दुखड़े निवारती।
ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती।
नहीं मांगते धन और दौलत न चांदी न सोना।
हम तो मांगें मां तेरे मन में एक छोटा सा कोना।।
सब की बिगड़ी बनाने वाली लाज बचाने वाली।
सतियों के सत को संवारती।
ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती।


जय माता दी

आरती श्री वैष्णो देवी जी की

जै वैष्णवी माता, मैया जै वैष्णवी माता।
हाथ जोड़ तेरे आगे, आरती मैं गाता।।
शीश पे छत्र बिराजे, मूरतिया प्यारी।
गंगा बहती चरनन, ज्योति जगे न्यारी।।
ब्रह्मा वेद पढ़े नित द्वारे, शंकर ध्यान धरे।
सेवक चंवर डुलावत, नारद नृत्य करे।।
सुन्दर गुफा तुम्हारी, मन को अति भावे।
बार-बार देखन को, ऐ मां मन चावे।।
भवन पे झण्डे झूलें, घन्टा ध्वनि बाजे।
ऊंचा पर्वत तेरा, माता प्रिय लागे।।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, भेंट पुष्प मेवा।
दास खड़े चरणों में, दर्शन दो देवा।।
जो जन निश्चय करके, द्वार तेरे आवे।
उसकी इच्छा पूरण, माता हो जावे।।
इतनी स्तुति निशदिन, जो नर भी गावे।
कहते सेवक ध्यानूं, सुख सम्पति पावे।।



आरती श्री भैरवजी की

जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा,
जय काली और गौरादेवी करत हैं सेवा।
तुम्हीं आप उद्धारक, दुःख सिन्धु तारक,
भक्तों के सुख कारक, दीपक वसु धारक।
वाहन श्वान विराजत, कर त्रिशूल धारी,
महिमा अमित तुम्हारी, जय जय भयहारी।
तुम बिन देवा पूजन, सफल नहीं होवे,
चतुर्वर्तिका दीपक, दर्शक दुःख खोवे।
तेल चटिक दधि मिश्रित, भाषाबली तेरी,
कृपा कीजिये भैरव, करिये नहीं देरी।
पांव घुंघरू बाजत, डमरू डमकावत,
बटुकनाथ बन बालक, तन-मन हरषावत।
बटुकनाथ की आरती, जो कोई जन गावे,
कहे धरणीधर, मन वांछित फल पावे।
जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा,



आरती श्री तुलसीजी की

तुलसी महारानी नमो-नमो,
हरि की पटरानी नमो-नमो।
धन तुलसी पूरन तप कीनो,
शालिग्राम बनी पटरानी।
जाके पत्र मंजरी कोमल,
श्रीपति कमल चरण लपटानी॥
धूप - दीप - नैवेद्य आरती,
पुष्पन की वर्षा बरसानी।
छप्पन भोग छत्तीसों व्यंजन,
बिन तुलसी हरि एक न मानी॥
सभी सखी मैया तेरो यश गावें,
भक्तिदान दीजै महारानी।
नमो - नमो तुलसी महारानी,
नमो - नमो हरि की पटरानी॥



आरती श्री साईं बाबा जी की

आरती श्री सांईं गुरुवर की, परमानन्द सदा सुरवर की॥
जाकी कृपा विपुल सुखकारी। दु:ख-शोक,संकट,भयहारी॥
शिरडी में अवतार रचाया। चमत्कार से जग हर्षाया॥
कितने भक्त शरण में आये। सब सुख-शांति चिंरतन पाये॥
भाव धरे जो मन में जैसा। पावत अनुभव वो ही वैसा॥
गुरु की उदी लगावे तन को। समाधान लाभत उस मन को॥
सांईं नाम सदा जो गावे। सो फल जग में शाश्वत पावे॥
गुरवासर करि पूजा सेवा। उस पर कृपा करत गुरुदेवा॥
राम, कृष्ण, हनुमान, रूप में। जानत जो श्रद्धा धर मन में॥
विविध धर्म के सेवक आते। दर्शन का इच्छित फल पाते॥
सांईं बाबा की जय बोलो। अन्तर मन में आनन्द घोलो॥
सांईं दास आरती गावे। बसि घर में सुख मंगल पावे॥

ॐ श्री सच्चिदानंद महाराजाधिराज योगिराज
सदगुरु ब्रह्माण्ड नायक श्री सांईनाथ महाराज॥



आरती शनि देव जी की

जय-जय रविनन्दन जय दुःख भंजन।
जय-जय शनि हरे॥ टेक॥

जय भुजचारी, धारणकारी, दुष्ट दलन॥
तुम होत कुपित, नित करत दुखी, धनी को निर्धन॥
तुम धर अनुप यम का स्वरूप हो, कटत बंधन॥
तब नाम जो दस तोहि करत सो बस, जो करे रटन॥
महिमा अपार जग में तुम्हारे, जपते देवतन॥
सब नैन कठिन नित बरे अग्नि, भैंसा वाहन॥
प्रभु तेज तुम्हारा अति हिंकरारा, जानत सब जन॥
प्रभु शनि दान से तुम महान, होते हो मगन॥
प्रभु उदित नारायण शीश, नवायन धरे चरण॥
जय-जय शनि हरे।



आरती श्री पार्वती जी की

जय पार्वती माता जय पार्वती माता,
ब्रह्मा सनातन देवी शुभ फल की दाता। टेक
अरिकुल पद्म विनासिनि जय सेवक त्राता,
जग जीवन जगदम्बा हरिहर गुण गाता। जय०
सिंह का वाहन साजे कुण्डल है साथा,
देव वधु जहं गावत नृत्य करत ता था। जय०
सतयुग शील अ सुन्दर नाम सति कहलाता,
हेमांचल घर जन्मी सखियन संगराता। जय०
शुम्भ निशुम्भ विदारे हेमांचल स्याता,
सहस्त्र भुजा तनु धरिके चक्र लियो हाथा। जय०
सृष्टि रूप तुही जननी शिव संग रंगराता,
नन्दी भृंगी बीन लही है हाथन मदमाता। जय०
देवन अरज करत तक चित को लाता,
गावत दे दे ताली मन में रंग राता। जय०
मैय्या जी की आरती जो कोई भक्त गाता,
सदा सुखी नित रहता सुख सम्पति पाता। जय०



आरती श्री श्याम खाटू जी की

ऊँ जय श्री श्याम हरे, प्रभु जय श्री श्याम हरे।
निज भक्तन के तुमने पूरण काम करे॥
हरि ऊँ जय श्री श्याम हरे...

गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे।
पीत बसन पीताम्बर, कुण्डल कर्ण पड़े॥
हरि ऊँ जय श्री श्याम हरे...

रत्नसिंहासन राजत, सेवक भक्त खड़े।
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जरे॥
हरि ऊँ जय श्री श्याम हरे...

मोदक खीर चूरमा, सुवर्ण थाल भरे।
सेवक भोग लगावत, सिर पर चंवर ढुरे॥
हरि ऊँ जय श्री श्याम हरे...

झांझ, नगारा और घड़ियावल, शंख मृदंग घुरे।
भक्त आरती गावें, जय जयकार करे॥
हरि ऊँ जय श्री श्याम हरे...

जो धयावे फल पावे, सब दुःख से उबरे।
सेवक जब निज मुख से, श्री श्याम श्याम उचरे॥
हरि ऊँ जय श्री श्याम हरे...

श्रीश्याम बिहारी जी की आरती, जो कोई नर गावे।
गावल दासमनोहर, मनवांछित फल पावे॥
हरि ऊँ जय श्री श्याम हरे...



श्री राम स्तुति

श्री रामचंद्र कृपालु भजु मन, हरण भव भय दारणम्।
नव कंज लोचन, कंज मुख, कर कंज, पद कंजारुणम्।।
कंदर्प अगणित अमित छबि, नव नील नीरद सुंदरम्।
पट पीत मानहुँ तड़ित रुचि सुचि नौमि जनक-सुतावरम्।।
भज दीनबंधु दिनेश दानव दुष्ट दलन निकंदनम्।
रघुनंद आनंदकन्द कौशलचन्द्र दशरथ नंदनम्।।
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम्।
आजानुभुज शर-चाप धर, संग्रामजित खरदूषणम्।।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनिमन रंजनम्।
मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि खल दल भंजनम्।।
मन जाहि राचेउ मिलहि सो बरू सहज सुंदर साँवरो।
करुणा निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हर्षी अली।
तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि-पुनि, मुदित मन मन्दिर चली।।
दोहा : जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल, बाम अंग फरकन लगे।।



आरती रामदेव जी

ओ३म जय श्री रामादे स्वामी जय श्री रामादे।
पिता तुम्हारे अजमल मैया मेनादे॥ ओ३म जय...
रूप मनोहर जिसका घोड़े असवारी।
कर में सोहे भाला मुक्ता मणि धारी॥ ओ३म जय...
विष्णु रूप तुम स्वामी कलियुग अवतारी।
सुरनर मुनिजन ध्यावे जावे बलिहारी॥ ओ३म जय...
दुःख दलजी का तुमने पल भर में टारा।
सरजीवन भाण को तुमने कर डारा॥ ओ३म जय...
नाव सेठ की तारी दानव को मारा।
पल में कीना तुमने सरवर को खारा॥ ओ३म जय...



आरती श्री सालासर बालाजी

जयति जय जय बजरंग बाला,
कृपा कर सालासर वाला। टेक।
चैत सुदी पूनम को जन्मे,
अंजनी पवन खुशी मन में।
प्रकट भये सुर वानर तन में,
विदित यस विक्रम त्रिभुवन में।
दूध पीवत स्तन मात के,
नजर गई नभ ओर।
तब जननी की गोद से पहुंचे,
उदयाचल पर भोर।
अरुण फल लखि रवि मुख डाला।।
कृपा कर० ।।१।।
तिमिर भूमण्डल में छाई,
चिबुक पर इन्द्र बज्र बाए।
तभी से हनुमत कहलाए,
द्वय हनुमान नाम पाये।।

क्षमापन स्तोत्र

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरम्॥
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु में॥
जपच्छिद्रं जपश्छिद्रं यच्छिद्रं शांतिकर्मणि।
सर्वभवतु मेंऽछिद्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः॥
अपराध सहस्त्राणि क्रियन्तेंऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर।
ज्ञानतऽज्ञानतो वापि यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्व क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥
कर्मणा मनसा वाचा तव पूजा मया कृता।
तेन तुष्टिं समासाद्य प्रसीद परमेश्वर॥

प्रत्येक आरती के बाद इस स्तोत्र का पाठ करें। देवियों की आरती के बाद इस स्तोत्र का पाठ करते समय परमेश्वर शब्द के स्थान पर 'परमेश्वरी' शब्द का उच्चारण करें।

भटकती

श्री शिव प्रकाशन मंदिर